जैन-विवाह-विधि

(जैन शास्त्रानुसार)

संग्रहकर्ता और प्रकाशक—

सुमेरचन्द जैन, अराइज़नवीस

(पानीपत निवासी)

देहली

वीर सम्वत २४६८

प्रथम संस्करण ५००] [मूल्य ≈)

प्रकाशक के दो शब्द

यों तो जैन समाज में "विवाह पद्धति" सम्बन्धी कितनी ही पुस्तकें आज तक प्रकाशित हो चुकी हैं, परन्तु वह सब ही बहुत लम्बी और जटिल हैं, ऐसी पुस्तकें फालतू समय में भव्यजन के लिये कितनी ही उपयोगी हों, परन्तु विवाह संस्कार के समय ऐसी पुस्तकें बड़ी ही कठिनता पैदा करने वाली हैं। ऐसे उतावली के समय में इनमें से उपयोगी विधान और पाठों का छांट निकालना सर्व साधारण के लिये आसान काम नहीं है इसलिये सर्व साधारण के सुभीते के लिये एक संक्षिप्त सरल और सुगम विवाह पद्धति का प्रकाशित होना बहुत जरूरी है, इसी कमी को महसूस करते हुये मैंने जैन शास्त्र और मध्यभारत की प्रचलित रीति के अनुसार इस विवाह पद्धति को प्रकाशित कराने का प्रयास किया है। यदि मेरे इस प्रयास से विवाह संस्कार कराने वाले महानुभावों को कुछ भी सुभीता प्राप्त हुआ तो मैं अपने इस प्रयास को सफल समझूंगा।

इस पुस्तक के संग्रह और प्रकाशन कराने में मुझे जैन हाई-स्कूल पानीपत के उपसभापति धर्मवत्सल श्रीमान बाबू जयभगवान वकील, मैनेजर पं० मुनिसुव्रतदास, संस्कृत अध्यापक पं० फूलजारी-लाल शास्त्री, हिन्दी अध्यापक पं० भीमचन्द, देहली निवासी ला० पन्नालाल जैन अग्रवाल व पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार सरसावा से बहुत सहायता मिली है, इनके अतिरिक्त जिन२ महानुभावों ने इसमें सहायता दी है उन सब का आभारी हूँ।

देहली, ८-४-४२

सुमेरचन्द जैन

प्राक्कथन

विवाह का लक्षण:—

पूर्व संस्कारों के उदय से पैदा होने वाली कामवेदना की निवृत्ति के लिये, जो समाज और राष्ट्र की रीति नीति के अनुसार, इष्टदेव, अग्नि, पण्डित और प्रतिष्ठित पुरुषों की साक्षी पूर्वक जो पुरुष और स्त्री का पारस्परिक पाणिग्रहण है वह विवाह है❀।

विवाह का उद्देश्य:—

विवाह का उद्देश्य, विमूढ मन की कामुकता को गृहीत स्त्री वा पुरुष में कीलित करना है। उसकी लोलुपता को दाम्पत्य जीवन में सीमित करना है। उसकी उच्छृङ्खलता को गृहस्थ की मर्यादाओं से बांधना है। इस हालत में उसे लौकिक अभ्युदय की निःसारता दिखाकर शनैः शनैः उसकी विमूढता को हरना है। उसकी बाहर में फैली हुई वृत्तियों को भीतर की ओर खींचना है। उसके चित्त को परमार्थ में लगाना है। उसे शिव, शान्त, सुन्दर परमात्मपद को प्राप्त कराना है।

इस विवाह के करने से यहाँ मनुष्य को परम्परारूप से परमात्म पद मिलता है। वहाँ साक्षात् रूप से उसे अभ्युदय पद भी मिलता है। इस विवाह के करने से जहाँ मनुष्य का व्यक्तिगत हित होता है, वहाँ समष्टिगत हित भी होता है। जहाँ इसके करने से व्यक्तिगत जीवन में चारित्र बल बढ़ता है, उसमें प्रेम और संयम, त्याग और सेवा, मृदुता और मधुरता, उदारता और सहिष्णुता सरीखे उच्च भाव बढ़ते हैं। वहाँ इसके करने से समाज

❀ (अ) 'सद्वेध चारित्र मोहोदयाद्वहन विवाह:—

स्वामी अकलंकदेव-राजवार्तिक ७.२८

(आ) "युक्तितो वरण विधानमग्निदेव द्विज साक्षिकं च पाणिग्रहणं विवाह:" । श्री सोमदेव:—नीतिवाक्यामृत

में व्यवस्था पैदा होती है। राष्ट्र में मर्यादा स्थापन होती है, और लोक में शांति फैलती है इतना ही नहीं इस विवाह के करने से सदाचारी सन्तान पैदा होती है। जो मानव संस्कृति को, मनुष्य कल्याण के साधनों को, मनुष्य उद्धार के मार्गों को सदा जिन्दा रखती है इसी वास्ते धर्म गुरुओं ने विवाह को मंगल कहा है।

विवाह समय पूजा और स्तुतिः—

यों तो हर शुभ कार्य के पहिले इष्ट को स्मरण करना जरूरी है, परन्तु इस विवाह मंगल के समय जितना भी इसके उद्देश्यों को याद रक्खा जाये, उन्हें भावनारूप भाया जाये, उन्हें पूर्णतया सिद्ध करने वाले महा पुरुषों का गुणानुवाद किया जाये, उनकी पूजा वन्दना की जाये, उतना ही थोड़ा है। यह स्मरण और स्तवन मनुष्य की दृष्टि को विशुद्ध रखता है, उसे इष्ट की ओर लगाये रखता है, उसे भूलों में पड़नेसे बचाये रखता है। इसी-लिये शास्त्रकारों ने विवाह के हर स्थल पर उपर्युक्त उद्देश्यों को याद रखना, सिद्ध पुरुषों की स्तुति करना जरूरी ठहराया है।

इसी आशय को दृष्टि में रखकर इस पुस्तक में उन भावनाओं और स्तुति पाठों को संकलित किया गया है। जो विवाह के विविध अवसरों के समय मनन किये जाने जरूरी हैं।

वास्तव में तो विवाह संस्कार उसी समय होता है, जब वर कन्या का पाणिग्रहण होता है, परन्तु प्रचलित प्रथा के अनुसार इस पाणिग्रहण से पहिले होने वाली लग्न आदि रीतियों को भी विवाह संस्कार का अंश समझ लिया गया है, इसलिये इन लग्न, मण्डप, घुड़चढ़ी, बटेरी आदि के अवसरों पर भी इस पूजा वन्दना का होना जरूरी है।

यह पूजा विधान चार अवयवों वाला है। १. इष्टदेव की स्था-पना २. इष्टदेव की स्तुति, ३. इष्ट देव की वन्दना ४. इष्टदेव विस-र्जन और शान्ति की भावना। इसी क्रम से यथावश्यक इस पूजा विधान का उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है। यदि भव्यजन

चाहें तो इसी प्रकार के अन्य संस्कृत, प्राकृत या हिन्दी के पाठों को इन अवसरों पर पढ़ सकते हैं। इनके अतिरिक्त यदि समय इजाजत दे तो इन अवसरों पर आध्यात्मिक भजन और मांगलिक गीत भी गाने चाहियें।

जयभगवान जैन,
वकील, (पानीपत)

पूजा विधान के लिये आवश्यक चीजें

पूजा विधान के लिए निम्न चीजों की जरूरत होती है इन्हें पहिले से ही इकट्ठा कर लेना चाहिये।

१ सिद्धयन्त्र-यह चान्दी या तांबेके पत्र पर बना हुआ होता है, यदि चान्दी या तांबे का बना हुआ सिद्धयंत्र न मिल सके तो इस यन्त्र को किसी रकाबी पर लिखकर तैयार कर लेना चाहिये।

सिद्धयन्त्र की रचना

विनायक यंत्र
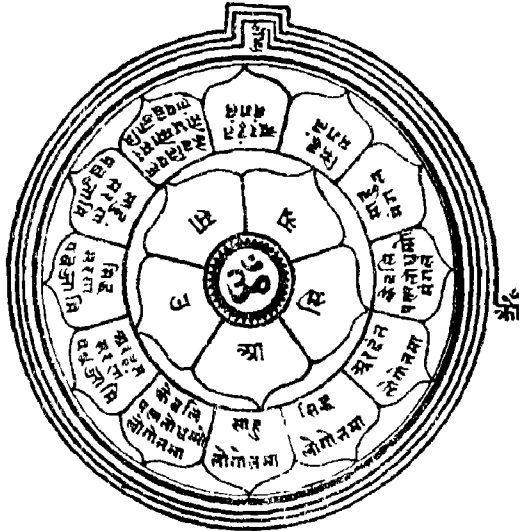
नोट—बहुत से महानुभावों की सम्मति है कि इस यंत्र में नीचे जहाँ पर 'साहु लोगोत्तमा' लिखा है यहाँ से 'ह्रीं' का वलय देकर 'अरहंत मंगलं' तथा 'अ० सि' आदि को भी यहीं से वलयाकार में लिखना चाहिये।

२ अष्ट मंगल द्रव्य–इनके नाम निम्न प्रकार हैं १–झारी, २ पंखा ३ कलश, ४ ध्वजा, ५ चमर, ६ ठौणा, ७ छत्र, और ८ दर्पण। यदि ये अष्ट मंगल द्रव्य न मिल सकें तो एक थाल में या कई छोटी २ रकाबियों में केसर से इन के आकार बना लेने चाहियें।

३ वेदी–वेदी तीन कटनी वाली होनी चाहिए। यह आम तौर पर लकड़ी की बनी-बनाई मिल जाती है, यदि न मिले तो ईंटों की बना लेनी चाहिये।

सिद्ध यन्त्र

शास्त्र

अष्ट मंगल द्रव्य
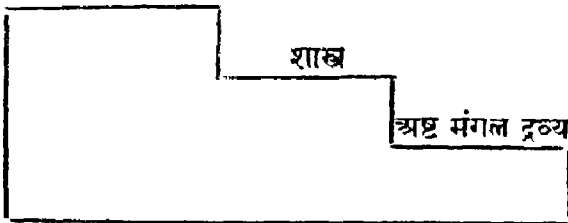
हवन कुण्ड-यह आम तौर पर तांबे का बना हुआ मिल जाता है, यह आकार में चौकोर होता है, यदि तांबे का बना हुआ न मिले तो ईंटों का बना लेना चाहिये या मिट्टी की कुंडिया से काम लेना चाहिये।

५ पूजा सामग्री-पूजा निम्न अष्ट द्रव्य द्वारा की जाती है।

१. जल, २. चन्दन, ३. अक्षत, ४. पुष्प, ५. नैवेद्य, ६. दीप, ७. धूप, और ८. फल।

इन अष्ट द्रव्यों को तय्यार करने के लिये चावल, बादाम, छुवारे, गोला केसर की जरूरत होती है।

६ हवन सामग्री:-

हवन के लिये तीन प्रकार की सामग्री की जरूरत होती है—१. धूप, २. घी, ३. समिधा (लकड़ी)

धूप निम्न चीजों को कूट छान कर तय्यार की जा सकती है—चन्दन चूरा, लौंग, देवदारु, काफूर, खाण्ड, बालछड़, गोला, इलायची (छोटी)

समिधा पाँच प्रकार की होती हैं—सफेद चन्दन की लकड़ी, लाल चन्दन की लकड़ी, पीपल की लकड़ी, आक की लकड़ी, ढाक की लकड़ी।

७. पूजा के उपकरण:-पूजा के लिये निम्न उपकरण की जरूरत होती है—२ थाल, २ रकाबी, २ कलशियां, २ चमचियां, २ छोटी २ कटोरियाँ, धूपदान, २ छलने, और २ चौकियां।

—०—

श्री वीतरागाय नमः

जैन-विवाह-विधि

मङ्गलाचरण

स्वस्ति श्रीकारकं नत्वा वर्द्धमानं जिनेश्वरं ।
गौतमादिगणाधीशान् वाग्देवीं च विशेषतः ॥१॥
विवाहस्य विधिं वक्ष्ये जैनशास्त्रानुगामिनीं ।
गृहिधर्मानुरोधेन संक्षेपेण हितां सतां ॥२॥

१ लग्न विधि

लग्न वाले दिन वर और कन्या दोनों को अपने २ मकान पर निम्न प्रकार सिद्धयन्त्र की स्थापना कर इष्ट देव की स्तुति और पूजा करनी चाहिये।

सिद्धयन्त्र स्थापना

निम्न मन्त्र पढ़कर सिद्धयन्त्र की स्थापना करें।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐनमः सिद्धेभ्यः, ॐनमः सिद्धेभ्यः।
ॐ जय जय जय, णमोऽस्तु, णमोऽस्तु, णमोऽस्तु ।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।
ॐह्रीं अनादिमूलमन्त्राय नमः ।

पुनः, ॐ ह्रीं पञ्च परमेष्टिवाचकाय ॐ मन्त्राय नमः ।

(पुष्पांजलिक्षेपणं)

श्लोक :—

अपराजितमन्त्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मगलं मतः ॥ १ ॥ पुष्पं

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत् पञ्च नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥२॥ पुष्पं

ओंकारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः ॥३॥ पुष्पं

इति यंत्र स्थापनं । पश्चात् समये इष्टस्तवनं पठेत् ।

इष्टदेव—स्तुति

(इसके लिये निम्न पाठ पढ़ें)

त्रैलोक्यं सकलं त्रिकालविषयं, सालोकमालोकितम् ।
साक्षाद्येन यथा स्वयं करतले, रेखात्रयं सांगुलि ॥
रागद्वेषभयामयान्तकजरा,लोलत्वलोभादयो ।
नालं यत्पदलंघनाय स महादेवो मया वन्द्यते ॥१॥ पुष्पं

माया नास्ति जटा कपालमुकुटं, चन्द्रो न मूर्द्धावली
खट्वांगं न च वासुकि र्न च धनुः, शूलं न चोग्रं मुखं ॥
कामो यस्य न कामिनी न च वृषो, गीतं न नृत्यं पुनः ।
सोऽस्मान् पातु निरंजनो जिनपतिः,सर्वत्र सूक्ष्मः शिवः।२। पुष्पं

खट्वाङ्गं नैव हस्ते, न च हृदि रचिता, लम्बते रुण्डमाला।
भस्माङ्गं नैव शूलं, न च गिरिदुहिता, नैव हस्ते कपालम् ॥
चन्द्रार्द्धं नैव मूर्द्धन्यपि वृषगमनं, नैव कण्ठे फणीन्द्रम् ।
तं वन्दे त्यक्तदोषं, भवभयमथनं, ईश्वरं देवदेवम् ॥३॥ पुष्पं
यो विश्वं वेद वेद्यं, जननजलनिधेर्भङ्गिनः पारदृश्वा ।
पौर्वापर्य्याविरुद्धं, वचनमनुपमं, निष्कलंकं यदीयम् ॥
तम्वन्दे साधुवन्द्यं, सकलगुणनिधिं, ध्वस्तदोषद्विषन्तम्
बुद्धं वा वर्द्धमानं, शतदलनिलयं,केशवं वा शिवं वा ॥४॥ पुष्पं
रागो यस्य न विद्यते क्वचिदपि, प्रध्वस्तसंगग्रहा-
दस्त्रादिपरिवर्जनान्नच बुधैः, द्वेषोऽपि संभाव्यते ॥
तस्मात्साम्यपथात्मबोधनिरतो, जातः क्षयः कर्मणा ।
मानन्दादिगुणाश्रयस्तुनियतं, सोऽर्हन्सदा पातुवः ॥५॥ पुष्पं
जातिर्याति न यत्र यत्र च मृतो, मृत्युर्जराजर्जरा ।
जाता यत्र न कर्मकायघटना, नो वाग्न च व्याधयः ॥
यत्रात्मैव परं चकास्ति विशदः, ज्ञानैकमूर्त्तिप्रभुः ।
नित्यं तत्पदमाश्रिता निरुपमा,सिद्धाः सदा पान्तुवः।६। पुष्पं
जित्वा मोहमहाभटं भवपथे, दत्तोग्रदुःखाश्रमे ।
विश्रान्ता विजनेषु योगिपथिका, दीर्घे चरन्तः क्रमात् ॥
प्राप्ता ज्ञानधनाश्चिरादभिमताः, स्वात्मोपलम्भालयं ।
नित्यानन्दकलत्रसङ्गसुखिनो, ये तत्र तेभ्यो नमः ॥७॥ पुष्पं

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

इति इष्टदेवस्तुतिः समाप्ता

भावार्थ—जो सर्वज्ञ है जिसने तीन लोक और तीन काल को साक्षात् कर लिया है। जिसने राग-द्वेष आदि भीतरी कमजोरियों को विजय कर लिया है उस महादेव को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

२, ३—जो न किसी माया से विलिप्त है, न जटा धारी है, न चन्द्र धारी है, न रुंड-मुंडों की माला पहने हुए है, न साँपों को लिपटाए हुए है, न धनुष और त्रिशूल धारी है, न किसी कामना वाला है, न किसी कामिनी को साथ रखता है, न बैल पर सवार है, न गाता और नाचता है, ऐसा निरंजन जिन पति शिव हम सब की रक्षा करे ॥ २ ॥ ३ ॥

४—जो विश्वदर्शी है, जो समदर्शी है, जिसका वचन पूर्वापर विरोध रहित है, नय और प्रमाण से सिद्ध है, जो अपने विविध गुणों के कारण बुद्ध, वर्धमान, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि नामों से विख्यात है उस निर्दोष गुणाधीश ईश्वर को नमस्कार है ॥ ४ ॥

५—जो निःशस्त्र है, मोह का विजेता है, कर्मशत्रुओं का नाश करने वाला है, राग-द्वेष रहित है, साम्यता से भरा है, आत्मरस में लीन है, परम आनन्दमय है, परम शान्त और सुन्दर है, ऐसा अर्हन्त देव हमारी रक्षा करे ॥ ५ ॥

६—जो जन्म-मरण रहित है, जो रोग और बुढ़ापे से दूर है जो अशरीरी है, जो ज्ञान की मूर्त्ति है, निर्मलता की मूर्त्ति है, ऐसे अनुपम सिद्ध भगवान् हमारी रक्षा करें ॥ ६ ॥

७—जिन्होंने मोह का मार्ग छोड़कर वैराग्य का मार्ग ले लिया है,

जिन्होंने विषय-वासना और धन-वैभव को छोड़कर समता का मार्ग लिया है, जिन्होंने अपनी सहनशीलता और तपश्चरण के बल से ज्ञान-धन और आत्मानन्द को प्राप्त किया है ऐसे साधुओं को बार बार नमस्कार है।

देव–पूजा

इसके उपरान्त निम्न पाठ पढ़कर (अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनवाणी, जिनधर्म, जिन चैत्य, जिन चैत्यालय) नव देव की पूजा करें।

नव देव पूजा पाठ

इन्द्रस्य प्रणतस्य शेखरशिखा रत्नार्कभासानख–
श्रेणीतेक्षणबिम्बशुंभदलिभृद्गोल्लसत्पाटलम्।
श्रीमत्पांघ्रियुगं जिनस्य दधदप्याम्भोजसाम्यं रजः–
त्यक्तं जाड्यहरं परं भवतु न श्चेतोऽर्पितं शर्मणे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसर्वज्ञवीतरागभगवदर्हत्परमेष्ठिनं जलादिभिरर्चयामि।

तत्सर्वप्रतिबन्धकप्रविगमप्रव्यक्तसम्यक्त्वविद्।
दृग्वीर्याण्यवगाहनागुरुलघुप्रध्वस्तवाधोद्धुरम् ॥
संजानामि जपामि संततमभिध्यायामि गायामि तम्।
संस्तौमि प्रणमामि यामि शरणं, सिद्धं विशुद्धं प्रभुम् ॥२॥

ॐ ह्रीं सकलकर्मविमुक्तपरब्रह्मपरमेश्वराय श्रीसिद्ध परमेष्ठिनं जलादिभिरर्चयामि।

आचारवत्वादिगुणाष्टकाढ्यम् दशप्रकृष्टस्थितिकल्पदीप्तम् ।
द्विषट्तपःसंभृतमात्तषड्भिदावश्यकं सूरिमसुं नमामि ॥३॥

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणान्वित श्रीमदाचार्यपरमेष्ठिनं जलादिभिरर्चयामि ।

एकादशांगकचतुर्दशपूर्वसर्व-
सम्यक्श्रुतेः पठन-पाठन-पाटवो यः ॥
कारुण्यपुण्यसरिदुद्गमसुद्रचित्तः ।
तं पाठकं मुनिमुदारगुणं नमामि ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पञ्चविंशतिगुणसमन्वितश्रीमदुपाध्यायपरमेष्ठिनं जलादिभिरर्चयामि ।

अस्नानभूशयनलोचविचेलतैक-
भक्तोर्ध्वभुक्तचरदघर्षणशुद्धवृत्तम् ॥
पञ्चव्रतोद्गमसमितीन्द्रियरोधषट्स-
दावश्यकात्तमतरं प्रणमामि साधुम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिगुणसमन्वितश्रीसाधुपरमेष्ठिनं जलादिभिरर्चयामि।

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशाङ्गं विशालं ।
चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगुणवृषभैः धारितं बुद्धिमद्भिः ॥
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं, ज्ञेयभावप्रदीपम् ।
भक्त्या नित्यं प्रवन्दे श्रुतमहमखिलं, सर्वलोकैकसारम् ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोत्पन्नभगवतीवाग्देव्यै जलादिभिरर्चयामि।

धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधैश्चिन्वते ।
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं, धर्माय तस्मै नमः ॥
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भवभृतां, धर्मस्य मूलं दया ।
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं, हे धर्म ! मां पालय ॥७॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञवीतरागप्रणीतशास्वतधर्माय जलादिभिरर्चयामि ।

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्नित्यं त्रिलोकीगतान् ।
वन्दे भावनव्यन्तरान् द्युतिवरान्कल्पामरान्सर्वगान् ॥
सद्गन्धाक्षतपुष्पचारुचरुभिर्दीपैश्च धूपैः फलैः ।
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शान्तये ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिश्रीजिनालयेभ्यो जलादिभिरर्चयामि ।

यावन्ति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्ति श्रीवीतरागप्रतिबिम्बेभ्यो जलादिभिरर्चयामि ।

इति नवदेवपूजा समाप्ता

अष्ट मंगल पाठ

(पूजा के पश्चात निम्न पाठ पढ़े)

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा-
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनांभोधीन्दवः स्थायिनः ॥
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः ।
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥१॥अर्घं

सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः ।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलंचैत्यालयश्चालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥२॥ अर्घं
ये पंचौषधिऋद्धयः श्रुततपोवृद्धिं गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौ विधाश्चारिणः ।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलाश्च ते मुनिवराः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥३॥ अर्घं
ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥४॥ अर्घं
कैलाशे वृषभस्य निर्वृत्तिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् ।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतः,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धमहिमाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥५॥ अर्घं
यो गर्भावतरोत्सवेष्यर्हतां जन्माभिषेकोत्सवे,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञान भाक् ।
या कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा सम्पादिता भाविता,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥६॥ अर्घं
२४ १२ १२
जायन्ते जिन-चक्रवर्तिबलभृद्-भोगीन्द्रकृष्णादयो,

धर्मादेव दिगंगनांगविलसच्छश्वद्यशश्चन्दनाः ।
तद्धीना नरकादियोनिषु नरा दुःखं सहन्ते ध्रुवं,
ते स्वर्गात् सुखरामणीयकपदं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥७॥ अर्घं
सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
संपद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः ।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किम्वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥८॥ अर्घं
इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणां मुखात् ।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥९॥ अर्घं

इति मंगलाष्टकम् ।

दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु,
सद्बुद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु ।
आरोग्यमस्तु विजयोस्तु महोस्तु, पुत्र-
पौत्रोद्भवोस्तु तव सिद्धपतेः प्रसादात् ॥

इस पूजा पाठ के समाप्त होने पर गृहस्थाचार्य निम्न मन्त्र पढ़कर वर के तिलक और कन्या के टीकी लगावे ।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलं ॥
सर्व मंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं ।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥

२-मण्डप वा मंढा विधि—

मण्डप वा मंढा बनाने वाले दिन, वर और कन्या दोनों को अपने २ स्थान पर उपर्युक्त प्रकार से सिद्धयंत्र की स्थापना कर इष्टदेव की स्तुति वन्दना पृष्ठ १ से पृष्ठ ६ तक करनी चाहिये।

३-घुड़चढ़ी की विधि—

घुड़चढ़ी वाले दिन, घुड़चढ़ी से पहिले, वर को उपर्युक्त रीति से सिद्ध यन्त्र की स्थापना कर इष्टदेव की स्तुति और पूजा पृष्ट १ से पृष्ट ६ तक करनी चाहिये।

४-बटैरी की विधि—

बटैरी के पहुँचने पर उपर्युक्त रीति से सिद्ध-यंत्र की स्थापना कर इष्टदेव की स्तुति और पूजा पृष्ट १ से पृष्ट ६ तक करें, तत्पश्चात् 'मंगलं भगवान् वीरो' आदि मंत्र पढ़कर वर के तिलक लगायें और उसे रुपया, आभूषण आदि भेट देने की रसम को किया जावे।

५-पाणिग्रहण विधान—

पाणिग्रहण के समय निम्न रीति से आठ प्रकार का विधान करना चाहिये।

१. पूजा विधान, २. मोड़ी बन्धन और पटका बन्धन, ३. शाखोच्चारण, ४. कन्यादान और पाणिग्रहण, ५. हवन, ६. सप्तपदि और गृहस्थ-धर्म्म का उपदेश, ७. फेरे व अग्नि की प्रदक्षिणा, और ८. शान्तिपाठ

इस विधान के लिये बेटी वाले पक्ष को अपने स्थान में एक सुन्दर मण्डप बनाना चाहिये—इसे स्तम्भों और फूलों से सजाना चाहिये।

इस सभा-मण्डप के बीच में तीन कटनी वाली वेदी बनानी चाहिये, या लकड़ी की बनी बनाई तीन कटनी वाली वेदी रखनी चाहिये। इस वेदी की प्रथम ऊपर की कटनी पर सिद्ध यंत्र, बीच की कटनी पर आर्ष शास्त्र, और तीसरी नीचे की कटनी पर अष्ट मंगल द्रव्य की स्थापना करनी चाहिये।

इस वेदी के आगे हवन के लिये चौकोर अग्नि कुण्ड ईंटों का बनाना चाहिये, या बना बनाया धातु का अग्निकुण्ड रखना चाहिये। इस कुण्ड के एक तरफ धर्मचक्र और दूसरी तरफ छत्र त्रय रखने चाहियें।

नोट—इस पूजा विधान के लिये जिन २ चीजों की जरूरत होती है, उनकी सूची च. छ पृष्ठों पर दी गई है।

१-पूजा विधानः—

यह पूजा विधान मण्डप में बैठकर वर और कन्या दोनों को ही इकट्ठा करना चाहिये। इस विधान के समय वर का आसन बाईं ओर, और कन्या का आसन दाईं ओर होना चाहिये।

इस पूजा विधान के समय पूर्वोक्त रीति से पृष्ठ १ से पृष्ठ ६ तक सिद्ध यन्त्र की स्थापनार्थ मन्त्र पढ़कर इष्टदेव की स्तुति और पूजा करनी चाहिये।

२ मौड़ी बन्धन और पटका बन्धनः—

पूजा विधान के उपरान्त लड़की के सिर पर रोली से बने स्वस्तिक चिह्नों से चिह्नित मौड़ी को बांधा जाये, तत्पश्चात् बेटे वाले से पटका लेकर उसके दोनों सिरों पर रोली से स्वस्तिका के निशान किये जायें, और उसके एक सिरे में दूब घास, पीले चावल, एक टका-दो पैसे, हल्दी की गिराह और सुपारी बांधकर उसे लड़की के पौंचे के साथ बांध दिया जावे और पटके का दूसरा सिरा लड़के को दे दिया जावे।

३ शाखोच्चारणः—

तदुपरान्त शाखोच्चारण होना चाहिये अर्थात पहिले निम्नरीति से वर पक्ष का शाखोच्चार और उसके बाद कन्या पक्ष का शाखोच्चार होना चाहिये ।

बन्दूं देव युगादि जिन, गुरु गौतम के पाय ।
सुमरूँ देवी शारदा, ऋद्धि सिद्धि वर दाय ॥ १ ॥

अब आदीश्वर कुमर को, सुनियो व्याह विधान ।
विघन विनाशन पाठ है, मंगल मूल महान ॥ २ ॥

इस ही भरत सुक्षेत्र में, आरज खण्ड मभार ।
सुख सों बीते तीन युग, शेष समय की बार ॥ ३ ॥

चौदह कुलकर अवतरे, अन्तिम नाभि नरेश ।
सब भूपन में तिलक सम, कौशल पुर परमेश ॥ ४ ॥

मरु देवी राणी प्रगट, शुभ लक्षण आधार ।
तिन के तीर्थङ्कर ऋषभ, भये प्रथम अवतार ॥ ५ ॥
स्वामी स्वयम्भू परम गुरु, स्वयं बुद्ध भगवान ।
इन्द्र चन्द्र पूजत चरण, आदि पुरुष परमाण ॥ ६ ॥
तीन लोक तारण तरण, नाम विरद विख्यात ।
गुण अनन्त आधार प्रभु, जगनायक जगतात ॥ ७ ॥
जन्मत व्याह उछाह में, शुभ कारज की आदि ।
पहले पूज्य मनाइये, विनशैं विघन विषाद ॥ ८ ॥
सकल सिद्धि सुख सम्पदा, सब मन वांछित होय ।
तीन लोक तिहुँ काल में, और न मंगल कोय ॥ ९ ॥
इस मंगल को भूलि के, करैं और से प्रीति ।
ते अजान समझैं नहीं, उत्तम कुल की रीति ॥ १० ॥
नाभि नरेश्वर एक दिन, कियो मनोरथ सार ।
आदि कुमर परनाइये, बोले सुबुधि विचार ॥ ११ ॥
अहो कुमर तुम जगत गुरु, जगत पूज्य गुणधाम ।
जन्म योग तें लोक सब, कहैं हमें गुरु नाम ॥ १२ ॥
तातें नहीं उलंघने, मेरे वचन कुमार ।
व्याह करो आशा भरो, चलो गृहस्थाचार ॥ १३ ॥
सुनके वचन सु तात के, मुसकाये जिन चन्द ।
तब नरेश जानी सही, राजी ऋषभ जिनंद ॥ १४ ॥
बेटी कच्छ सु कच्छ की, नन्द सुनन्दा नाम ।

अतुल रूप गुण आगरी, मांगी बहु गुण धाम ॥१५॥
उभय पक्ष आनन्द भयो, सब जग बढ़्यो उछाह ।
लग्न मुहूरत शुभ घड़ी, रोप्यो ऋषभ विवाह ॥ १६ ॥
खान पान सन्मान विधि, उचित दान परकाश ।
संतोषे पोषे सुजन, योग्य वचन मुख भाष ॥ १७ ॥
गज तुरंग वाहन विविध, बनी बरात अनूप ।
रथ में राजत ऋषभ जिन, संग बराती भूप ॥ १८ ॥
नाचैं देवी अप्सरा, सब रस पोषैं सार ।
मंगल गावैं किन्नरी, देव करैं जयकार ॥ १९ ॥
मंगलीक बाजे बजें, बहु विधि श्रवण सुहांहि ।
नर नारी कौतुक निरखि, हरषे अंग न मांहि ॥ २० ॥
आदि देव दुलहा जहां, पायक इन्द्र समान ।
तिस बरात महिमा कहन, समरथ कौन सुजान ॥२१॥
आगे आये लेन को, कच्छ सुकच्छ नरेश ।
विविध भेट देकर मिले, उर आनन्द विशेष ॥ २२ ॥
रतन पोल पहुंचे ऋषभ, तोरण घंटा द्वार ।
रतन फूल बरषे घने, चित्र विचित्र अपार ॥ २३ ॥
चौरी मण्डप जगमगै, बहु बिधि शोभै ऐन ।
चारों दिश चलकें खरे, कंचन कलश रु बैन ॥२४॥
मोती झालर झूमका, झलकें हीरा हीर ।
मानो आनन्द मेघ की, झड़ी लगी चहुँ ओर ॥२५॥

वर कन्या बैठे जहाँ, देखत उपजै प्रीत ।
पिकबैनी मृगलोचनी, कामिनि गावैं गीत ॥ २६ ॥
कन्यादान विधान विधि, और उचित आचार ।
यथा योग्य व्यवहार सब, कीनों कुल अनुसार ॥ २७ ॥
इह विधि विविध उछाहसों, भये मंगलाचार ।
सज्जन कीनी वीनती, शोभा दिपे अपार ॥ २८ ॥
हर्षे नाभि नरेश मन, हरषे कच्छ सुकच्छ ।
मरु देवी आनन्द भयो, हरषे परिजन पच्छ ॥ २९ ॥
यह विवाह मंगल महा, पढ़त सुनत आनन्द ।
सबको सुख सम्पति करें, नाभिराय कुल चन्द ॥ ३० ॥
वंश बेल बाढ़ै सुखद, बढ़ै धर्म मर्य्याद ।
वर कन्या जीवैं सुचिर, ऋषभ देव परसाद ॥ ३१ ॥

इति शुभम्

नोट—शाखोचार के पश्चात वंशावली पढ़नी चाहिये ।

धर्ममूर्ति धर्मावतार शाहनपति शाह जैनधर्म परायण अमुक (गोत्र का नाम) गोत्रोद्भव श्रीमान् ला० जी प्रपौत्राय नेम धर्म चौबीसी स्वामी पार्श्वनाथजी सदा सहाय । धर्ममूर्त्ति धर्मावतार शाहनपति शाह जैनधर्म परायण अमुक (गोत्र का नाम) गोत्रोद्भव श्रीमान ला० - जी पौत्राय नेम धर्म चौबीसी स्वामी पार्श्वनाथ जी सदा सहाय ।

धर्ममूर्त्ति धर्मावतार शाहनपति शाह जैन धर्म परायण अमुक (गोत्र का नाम) गोत्रोद्भव श्रीमान् ला०
जी पुत्राय नेम धर्म चौबीसी स्वामी पार्श्वनाथ जी सदा सहाय ।

पश्चात् बेटी वाले की ओर से शाखोच्चार व वंशावली निम्न प्रकार से पढ़नी चाहिये

धर्ममूर्ति धर्मावतार शाहनपति शाह जैनधर्म परायण अमुक (गोत्र का नाम) गोत्रोद्भव श्रीमान् ला०
जी प्रपौत्रीय नेम धर्म चौबीसी स्वामी पार्श्वनाथजी सदा सहाय । धर्ममूर्त्ति धर्मावतार शाहनपति शाह जैनधर्म परायण अमुक (गोत्र का नाम) गोत्रोद्भव श्रीमान् ला०
जी पौत्रीय नेम धर्म चौबीसी स्वामी पार्श्वनाथ जी सदा सहाय । धर्ममूर्त्ति धर्मावतार शाहनपति शाह जैन धर्म परायण अमुक (गोत्र का नाम) गोत्रोद्भव श्रीमान् ला०
जी पुत्रीय नेम धर्म चौबीसी स्वामी पार्श्वनाथ जी सदासहाय ।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं कुंदकुंदाद्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलं ॥

ये श्लोक पढ़ कर वर कन्या पर पुष्प क्षेपण कर देने चाहियें ।

४—कन्यादान और पाणिग्रहण—

इसके पश्चात् कन्या का पिता कन्या का दायां हाथ पीले चन्दन से विलेपित करके उसका अंगूठा चावल, १) रुपया और जल सहित अपने हाथ में लेकर निम्न संकल्प पढ़ कर वर के हाथ में पकड़ादे और रुपया वर को दे दे। वर से रुपया लेकर वर का पिता थैली में डाल लेवे।

अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे अमुक देशे (देश का नाम) अमुक नगरे (नगर का नाम) अमुक संवत्सरे (संवत् का नाम) अमुक मासे (महीने का नाम) अमुक पक्षे (पक्ष का नाम) अमुक शुभ तिथौ (तिथि का नाम) अमुक वासरे (वार का नाम) शुभ वेलायाम् मण्डप सन्निधाने अमुक (लड़की के पिता का गोत्र) गोत्रोत्पन्नोऽहं (नाम लड़की के पिता का) इमां स्वकीयकन्यां सालंकारां स्वर्णजटितमणिमौक्तिकविद्रुमहरितरक्तधौतकौशेयवस्त्रशोभितां कन्यां अमुक (लड़के का गोत्र) गोत्राय भो वर! शुभाननाय तुभ्यं ददामि अस्याः ग्रहणं कुरु कुरु।

५—हवन विधि—

पाणिग्रहण के बाद वर कन्या दोनों निम्न मन्त्र पढ़कर इकट्ठा हवन करें।

धूपैः सन्धूपितानेक--कर्मभिर्धूपदायिनः ।
अर्चयामि जिनाधीश--सदागम-गुरून गुरून्

ॐ ह्रीं श्रीमज्जिन-श्रुत-गुरुभ्यो नमः धूपम् ।
सुरभीकृतदिग्व्रातैः धूपधूमैर्जगत्प्रियैः ।
यजामि जिन-सिद्धेश-सूर्युपाध्याय-मद्गुरून् ।
ॐ ह्रीं पञ्चपरमेष्ठिभ्यो धूपम् ।
मृद्वग्निसंगमसमुच्छलितोरुधूमैः ।
कृष्णागुरुप्रभृतिसुन्दरवस्तुधूपैः ।
प्रीत्या नटद्भिरिव ताण्डवनृत्यमुच्चैः ।
कर्मारिदारुदहनं जिनमर्चयामि ॥
ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने धूपम् ।
गोत्रत्रयसंभवसंततसंभवसद्गुरुलघुतारूपपरं ।
सर्गमसर्गमपीतमनुत्तमुज्झितसर्गासर्गभरम् ॥
कृष्णागुरुधूपैः सुरभितभूयैधूमैः स्पृष्टहरिद्धूपैः ।
यायज्मः सिद्धं सर्वविशुद्धं बुद्धमरुद्धं गुणरुद्धम् ॥
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने धूपम् ।
हुत्वा स्वमप्यगुरुभिः सुरभीकृताशै-
रग्नौ समुच्छलितसंभृतवृन्दधूमैः ॥
संधूपयामि चरणं शरणं शरण्यम् ।
पुण्यं भवभ्रमहरं गणिनां मुनीनाम् ।
ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिने धूपम्
संधूपिताखिलदिशैर्घनशंकयेह ।
बर्हिव्रजस्वनटनादिव नर्तयद्भिः ।

मृद्वग्निसङ्गतिततागरुधूपधूमैः ॥
श्रीपाठकक्रमयुगं वयमामहामः ।
ॐ ह्रीं उपाध्याय-परमेष्ठिने धूपम् ॥
स्वमग्नौ विनिक्षिप्य दौर्गन्ध्यबन्धं ।
दशाशास्यमुच्चैः करोति त्रिमन्ध्यम् ।
तदुद्दामकृष्णागुरुद्रव्यधूपैः—
यजे साधु साधु नटद्-व्यक्तरूपैः ॥
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने धूपम् ।

येन स्वयं बोधमयेन लोका आशामिता केचन वृत्तिकार्ये ।
प्रबोधिता केचन मोक्षमार्गे तमादिनाथं प्रणमामि नित्यम् ।१

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथाय धूपम् ।

इन्द्रादिभिः क्षीर-समुद्रतोयैः संस्नापितो मेरुगिरौ जिनेन्द्रः ।
यः कामजेता जनसौख्यकारी तं शुद्धभावादजितं नमामि ।२

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथाय धूपम्

ध्यानप्रबन्धप्रभवेन येन निहत्य कर्मप्रकृतीः समस्ताः ।
मुक्तिस्वरूपा पदवी प्रपेदे तं शम्भवं नौमि महानुरागात् ॥३

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथाय धूपम् ।

स्वप्ने यदीया जननी क्षपार्या गजादिवन्ह्यन्तमिदं ददर्श ।
यत्तात इत्याह गुरुः परोऽयं नौमि प्रमोदादभिनन्दनं तम् ॥४

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथाय धूपम् ॥

कुवादिवादं जयता महान्तं नयप्रमाणैर्वचनैर्जगत्सु ।

जैनं मतं विस्तरितं च येन तं देवदेवं सुमतिं नमामि ॥५

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथाय धूपम्

यस्यावतारे सति पितृधिष्ण्ये ववर्ष रत्नानि हरेर्निदेशात ।
धनाधिपः पण्णवमासपूर्वं पद्मप्रभं तं प्रणमामि साधुं ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथाय धूपम्

नरेन्द्रसर्पेश्वरनाकनाथैर्वाणी भवंती जगृहे स्वचित्ते ।
यस्यात्मबोधः प्रथितः सभायामहं सुपार्श्वं ननु तं नमामि ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथाय धूपम्

सत्प्रातिहार्यातिशयप्रपन्नो गुणप्रवीणो हतदोषसंगः ।
यो लोकमोहान्धतमः प्रदीपश्चन्द्रप्रभं तं प्रणमामि भावात ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभनाथाय धूपम्

गुप्तित्रयं पंच महाव्रतानि पंचोपदिष्टा समितिश्च येन ।
बभाण यो द्वादशधा तपांसि तं पुष्पदन्तं प्रणमामि देवं ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तनाथाय धूपम्

ब्रह्मव्रतान्तो जिननायकेनोत्तमक्षमादिर्दशधापि धर्मः ।
येन प्रयुक्तो व्रतबंधबुद्ध्या तं शीतलं तीर्थकरं नमामि ॥१०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथाय धूपम्

गणे जनानन्दकरे धरान्ते विध्वस्तकोपे प्रशमैकचित्ते
यो द्वादशाङ्गश्रुतमादिदेश श्रेयांसमानौमि जिनं तमीशं

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथाय धूपम्

मुक्त्यंगनायै रचिता विशाला रत्नत्रयी शेखरता च येन ।

यत्कण्ठमासाद्य बभूव श्रेष्ठा तं वासुपूज्यं प्रणमामि वेगात् ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथाय धूपम्

ज्ञानी विवेकी परमस्वरूपी ध्यानी व्रती प्राणिहितोपदेशी
मिथ्यात्वघाती शिवसौख्यभोगी बभूव यस्तं विमलं नमामि

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथाय धूपम्

अभ्यन्तरं बाह्यमनेकधा यः परिग्रहं सर्वमपाचकार ।
यो मार्गमुद्दिश्य हितं जनानां वंदे जिनं तं प्रणमाम्यनंतम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथाय धूपम्

सार्द्धं पदार्था नव सप्ततत्त्वैः पंचास्तिकायाश्च न कालकायाः
षड्द्रव्यनिर्णीतिरलोकयुक्तिर्येनोदिता तं प्रणमामि धर्मम्

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथाय धूपम्

यश्चक्रवर्ती भुवि पंचमोऽभूच्छ्रीनंदनो द्वादशमो गुणानां ।
निधिप्रभुः षोडशमो जिनेन्द्रस्तं शान्तिनाथं प्रणमामि भावात्

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय धूपम्

प्रशंसितो यो न बिभर्ति हर्षं विरोधितो यो न करोति रोषम्
शीलव्रताद् ब्रह्मपदं गतो यस्तं कुंथुनाथं प्रणमामि हर्षात्

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथाय धूपम्

यः संस्तुतो यः प्रणतः सभायां यः सेवितोऽन्तर्गुणपूरणाय
यदच्युतैः केवलिभिर्जिनैश्च देवाधिदेवं प्रणमाम्यरं तम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथाय धूपम्

रत्नत्रयं पूर्वभवान्तरे यो वृतं पवित्रं कृतवानशेषं ।

कायेन वाचा मनसा विशुद्धया तं मल्लिनाथं प्रणमामि भक्त्या

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथाय धूपम्

ब्रुवन्नमः सिद्धपदाय वाक्यमित्यग्रहीद्यः स्वयमेव लोचं।
लौकांतिकेभ्यः स्तवनं निशम्य वंदे जिनेशं मुनिसुव्रतं तं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथाय धूपम्

विद्यावते तीर्थकराय तस्मायाहाग्दानं ददतो विशेषात्।
गृहे नृपस्याजनि रत्नवृष्टिः स्तौमि प्रणामान्नयतो नमिं तम्

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथाय धूपम्

राजीमतीं यः प्रविहाय मोक्षे स्थितिं चकारापुनरागमाय।
सर्वेषु जीवेषु दयां दधानस्तं नेमिनाथं प्रणमामि भक्त्या ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथाय धूपम्

सर्पाधिराजः कमठारितोयैर्ध्यानस्थितस्यैव फणावितानैः।
यस्योपसर्गं निरवर्तयत्तं नमामि पार्श्वं महतादरेण ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथाय धूपम्

भवार्णवे जन्तुसमूहमेनमाकर्षयामास हि धर्मपोतान्।
मज्जंतमुद्वीक्ष्य य एनमापि श्रीवर्द्धमानं प्रणमाम्यहं तम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमाननाथाय धूपम्

पीठिका के मन्त्र

ॐ सत्यजाताय नमः ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः ॥२॥
ॐ परमजाताय नमः ॥३॥ ॐ अनुपमजाताय नमः ॥४॥
ॐ स्वप्रधानाय नमः ॥५॥ ॐ अचलाय नमः ॥६॥

ॐ अक्षयाय नमः ॥७॥ ॐ अव्याबाधाय नमः ॥८॥
ॐ अनंतज्ञानाय नमः ॥९॥ ॐ अनंतदर्शनाय नमः ॥१०॥
ॐ अनंतवीर्याय नमः ॥११॥ ॐ अनंतसुखाय नमः ॥१२॥
ॐ नीरजसे नमः ॥१३॥ ॐ निर्मलाय नमः ॥१४॥
ॐ अच्छेद्याय नमः ॥१५॥ ॐ अभेद्याय नमः ॥१६॥
ॐ अजराय नमः ॥१७॥ ॐ अमराय नमः ॥१८॥
ॐ अप्रमेयाय नमः ॥१९॥ ॐ अगर्भवासाय नमः ॥२०॥
ॐ अक्षोभ्याय नमः ॥२१॥ ॐ अविलीनाय नमः ॥२२॥
ॐ परमघनाय नमः ॥२३॥ ॐ परमकाष्ठायोगरूपाय नमः ॥२४॥ ॐ लोकाग्रवासिने नमोनमः ॥२५॥ ॐ परमसिद्धेभ्योनमोनमः ॥२६॥ ॐ अर्हन्सिद्धेभ्यो नमो नमः ॥२७॥ ॐ केवलिसिद्धेभ्यो नमो नमः ॥२८॥ ॐ अंतःकृत्सिद्धेभ्यो नमो नमः ॥२९॥ ॐ परंपरासिद्धेभ्यो नमो नमः ॥३०॥ ॐ अनादिपरंपरासिद्धेभ्यो नमो नमः ॥३१॥ ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः ॥३२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे२ आसन्नभव्य२ निर्वाणपूजार्ह२ अग्नीन्द्र२ स्वाहा ॥३३॥

इस तरह ३३ मंत्र पढ़ आहूति देकर फिर नीचे लिखा आशीर्वाद सूचक मंत्र पढ़ आहूति देवे और पुष्प ले अपने सर्व पास बैठने वालों के ऊपर डाले।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु॥

अथ जातिमंत्र

ॐ सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्यामि ॥१॥ ॐ अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्यामि ॥२॥ ॐ अर्हन्मातुःशरणं प्रपद्यामि ॥३॥ ॐ अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्यामि ॥४॥ ॐ अनादिगमनस्य शरणं प्रपद्यामि ॥५॥ ॐ अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्यामि ॥६॥ ॐ रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्यामि ॥७॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्ते सरस्वति सरस्वति स्वाहा ॥८॥

इस तरह जातिमंत्र पढ़ आठ आहूति देकर आशीर्वाद-सूचक नीचे लिखा मंत्र पढ़ आहूति दे पुष्प क्षेपे ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु । समाधिमरणं भवतु ।

अथ निस्तारकमंत्र ।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥२॥ ॐ षट्कर्मणे स्वाहा ॥३॥ ॐ ग्रामपतये स्वाहा ॥४॥ ॐ अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा॥५॥ ॐ स्नातकाय स्वाहा॥६ ॐ श्रावकाय स्वाहा ॥७॥ ॐ देवब्राह्मणाय स्वाहा ॥८॥ ॐ सुब्राह्मणाय स्वाहा ॥९॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥१०॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे निधिपते निधिपते वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा ॥११॥

इस तरह ११ आहूति दे फिर वही "सेवाफलं षट् परम स्थानं

भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु । समाधिमरणं भवतु" । मंत्र पढ़कर आहूति दे पुष्प क्षेपे।

अथ ऋषिमंत्र ।

ॐ सत्यजाताय नमः ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः ॥२॥ ॐ निर्ग्रन्थाय नमः ॥३॥ ॐ वीतरागाय नमः ॥४॥ ॐ महाव्रताय नमः ॥५॥ ॐ त्रिगुप्ताय नमः ॥६॥ ॐ महायोगाय नमः ॥७॥ ॐ विविधयोगाय नमः ॥८॥ ॐ विविधर्द्धये नमः ॥९॥ ॐ अंगधराय नमः ॥१०॥ ॐ पूर्वधराय नमः ॥११॥ ॐ गणधराय नमः ॥१२॥ ॐ परमर्षिभ्यो नमो नमः ॥१३॥ ॐ अनुपमजाताय नमो नमः ॥१४॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे भूपते भूपते नगर-पते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा ॥१५॥

ऐसी १५ आहुति देकर वही निम्नलिखित आशीर्वाद सूचक मंत्र पढ़ आहुति दे पुष्प क्षेपे ।

"सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु । समाधिमरणं भवतु ॥"

अथ सुरेन्द्रमंत्र ।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥२॥ ॐ दिव्यजाताय स्वाहा ॥३॥ ॐ दिव्यार्चिर्जाताय स्वाहा ॥४॥ ॐ नेमिनाथाय स्वाहा ॥५॥ ॐ सौधर्माय स्वाहा ॥६॥ ॐ कल्पाधिपतये स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुचराय

स्वाहा ॥८॥ ॐ परंपरेन्द्राय स्वाहा ॥९॥ ॐ अहमिन्द्राय स्वाहा ॥१०॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥११॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥१२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे कल्पपते कल्पपते दिव्यमूर्त्ते दिव्यमूर्त्ते वज्रनामन् वज्रनामन् स्वाहा ॥१३॥

इस तरह १३ आहूति दे वही पहिले लिखित आशीर्वाद सूचक मंत्र पढ़ आहूति दे पुष्प क्षेपे।

अथ परमराजादि मंत्र।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥२॥ ॐ अनुपमेन्द्राय स्वाहा ॥३॥ ॐ विजयार्च्यजाताय स्वाहा ॥४॥ ॐ नेमिनाथाय स्वाहा ॥५॥ ॐ परमजाताय स्वाहा ॥६॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥८॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे उग्रतेजः उग्रतेजः दिशांजय दिशांजय नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा ॥९॥

इस तरह ९ आहूति दे वही आशीर्वाद सूचक मंत्र पढ़ आहूति दे पुष्प क्षेपे।

अथ परमेष्ठिमंत्र।

ॐ सत्यजाताय नमः ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः ॥२॥ ॐ परमजाताय नमः ॥३॥ ॐ परमार्हताय नमः ॥४॥ ॐ परमरूपाय नमः ॥५॥ ॐ परमतेजसे नमः ॥६॥ ॐ परमगुणाय नमः ॥७॥ ॐ परमस्थानाय नमः ॥८॥

ॐ परमयोगिने नमः ॥९॥ ॐ परमभाग्याय नमः ॥१०॥ ॐ परमर्द्धये नमः ॥११॥ ॐ परमप्रसादाय नमः ॥१२॥ ॐ परमकांक्षिताय नमः ॥१३॥ ॐ परमविजयाय नमः ॥१४॥ ॐ परमविज्ञानाय नमः ॥१५॥ ॐ परमदर्शनाय नमः ॥१६॥ ॐ परमवीर्याय नमः ॥१७॥ ॐ परमसुखाय नमः ॥१८॥ ॐ परमसर्वज्ञाय नमः ॥१९॥ ॐ अर्हते नमः ॥२०॥ ॐ परमेष्ठिने नमो नमः ॥२१॥ ॐ परमनेत्रे नमो नमः ॥२२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे त्रैलोक्यविजय त्रैलोक्यविजय धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा॥२३॥

इस प्रकार २३ आहूति देकर वही आशीर्वाद सूचक मंत्र पढ़ आहूति दे पुष्प क्षेपे।

इस तरह (३३+८+११+१५+१३+९+२३) ११२ आहूति और ७ आहूति आशीर्वाद की ऐसी १२० आहूति दे होम पूर्ण करे।

ये सात प्रकार पीठिकाके मंत्र हैं।

६-सप्तपदी—

हवन करने के बाद, सुख और सन्तोष के साथ जीवन निर्वाह करने के लिये, वर और कन्या दोनों एक दूसरे को निम्न प्रकार सात २ प्रतिज्ञायें दिलाते हैं। पहिले वर कन्या को सात प्रतिज्ञायें दिलाता है। फिर कन्या वर को सात प्रतिज्ञायें दिलाती है।

वर के सात वचन

१—मम कुटुम्बजनानां यथायोग्यं विनयशुश्रूषा करणीया (मेरे कुटुम्बियों की यथायोग्य सेवा विनय आदर सत्कार करना)

२—मम आज्ञा न लोपनीया । (मेरी आज्ञा को कभी भंग मत करना)

३—कटु निष्ठुरवाक्यं न वक्तव्यम् (कड़वा और मर्म भेदी वचन न बोलना)

४—सत्पात्रादिजनेभ्यो गृहागतेभ्यः आहारादि दाने कलुषितं मनो न कार्यम् (सत्पात्रादि-मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका आदि के घर आने पर दान देने में अपने मन को कलुषित न करना ।

५—रात्रौ परगृहे न गन्तव्यम् (रात को दूसरे के घर पर मत जाना)

६—बहुजनसंकीर्णेस्थाने न गन्तव्यम् (जहां बहुत से आदमी एकत्र हो रहे हों ऐसे स्थान पर मत जाना)

७—कुत्सिताधर्मिमद्यपायिनां गृहे न गन्तव्यम् (जिनका आचरण और धर्म खराब है ऐसे मद्यादि पीने वालों के घर पर नहीं जाना चाहिये)

एतानि मदुक्तानि वचनानि यदि स्वीकरोषि तदा

मम वामाङ्गी भव। (अर्थात् यदि मेरी इन सात शर्तों को स्वीकार करो तो मेरी वामांगी हो सकती हो। तब वधू कहे कि 'भगवन्तः कल्याणं करिष्यन्ति' अर्थात् ये समस्त प्रतिज्ञायें मुझे स्वीकार हैं।

कन्या के सात वचन

१—अन्यस्त्रीभिः सह क्रीडा न करणीया (अन्य स्त्रियों के साथ क्रीडा मत करना)

२—वेश्यागृहं न गन्तव्यम् (वेश्यादि खराब स्त्रियों के घर पर मत जाना)

३—द्यूतक्रीडा न कार्या (जूआ मत खेलना)

४—मदुद्योगात् द्रव्यमुपार्ज्य वस्त्राभरणैः ममरक्षाकरणीया (न्यायानुकूल उद्योगधन्धों में धन कमाकर मेरी रक्षा करना)

५—धर्म्मस्थानगमने न वर्जनीया (मन्दिर, तीर्थ क्षेत्रादि धर्म्म स्थान पर जाने से मुझे मत रोकना)

६—गुप्तवार्ता न रक्षणीया (कोई बात मुझ से गुप्त मत करना)

७—मम गुप्तवार्ता अन्याग्रे न कथनीया (मेरी गुप्त बात दूसरे के आगे प्रकाशित मत करना। 'भगवन्तः कल्याणं करिष्यन्ति' इति वरोवदेत् अर्थात् वर कहे कि ये सातों प्रतिज्ञायें मुझे स्वीकार हैं।

७-गृहस्थ धर्म का उपदेश:—

सप्तपदी होने के बाद गृहस्थाचार्य को चाहिये कि समाज और देश की स्थिति के अनुसार गृहस्थ जीवन चलाने के लिये वर और कन्या को निम्न बातों पर प्रकाश डालते हुए सदुपदेश दे।

(अ) विवाह संस्था का इतिहास-विवाह की प्रथा कैसे और कब से प्रचलित हुई? विवाह के भेद और उनमें ब्राह्मी विवाह की विशेषता।

(आ) ब्राह्मी विवाह का लक्षण

(इ) विवाह के उद्देश्य, गृहस्थ का स्वरूप.

(ई) सद्गृहस्थ के लक्षण,

(उ) गृहस्थ के षट् आवश्यक धर्म,

(ऊ) गृहस्थ के कुल और जाति, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य, गृहस्थ समस्त आश्रमों का आधार है।

८-फेरे अर्थात् अग्नि की परिक्रमा:—

सदुपदेश सुनने के बाद वर और कन्या जीवन-यात्रा के लिये एक दूसरे के साथी बन कर उपस्थित जनता के सामने हवनकुण्ड की अग्नि के गिर्द सात परिक्रमा देवें।

गृहस्थाचार्य को परिक्रमा के समय निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते रहना चाहिये।

आयुः पुष्टिं करोतु प्रहरतु दुरितं मंगलानांधिनोतु ।
सौभाग्यं वृद्धिमुच्चैर्नयतु वितरताद्वैभवं मंचिनोतु ।
रामा पद्माभिरामारमयतु सुयशः स्पष्टयित्वा तनोतु ।
पुत्रं पौत्रं प्रतापंप्रथयतु भवतामर्हतां भक्तिरुच्चैः ।

इसके पश्चात् कन्या को वर की बांई ओर बैठना चाहिये। इस विधान के अन्त में सब को मिलकर निम्न शान्ति पाठ पढ़ना चाहिये।

शान्ति पाठ

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपती चक्री करें,
हम सारिखे लघु पुरुष कैसे यथा विधि पूजा करें।
धन क्रिया ज्ञान रहित न जानें रीति पूजन नाथजी,
हम भक्ति वश तुम चरण आगे जोड़ दीने हाथ जी।
दुखहरण मंगलकरण आशाभरण जिनपूजा सही,
यह चित्त में सरधान मेरे शक्ति है स्वयमेव ही।
तुम सारिखे दातार पाये काज लघु जाचूँ कहा,
मुझे आप समकर लेहु स्वामी यही इक वांछा महा।
संसार भीषण विपिन में वसुकर्म मिलि आतापियो,
तिस दाहतें आकुलित चित्त है शान्तिथल कहूँ ना लियो।
तुम मिले शान्तिस्वरूप शान्ती करण समरथ जगपती,
वसु कर्म मेरे शान्त करदो शान्ति मय पञ्चम गती।

जबलों नहीं शिवलहों तबलों देहु यह धन पावना,
सतसंग शुद्धाचरण श्रुत-अभ्यास आतम भावना।
तुम बिन अनन्तानन्त काल गयो रुलत जगजाल में,
अब शरण आयो नाश दुख कर जोड़ नावत भाल मैं।
कर प्रमाण के मान तैं, गगन नपै किंह भन्त,
त्यों तुम गुण वरणन करत, कवि नहिं पावै अन्त।

विसर्जन

सम्पूर्ण विधि कर वीनऊँ इम परम पूजन पाठ में,
अज्ञानवश शास्त्रोक्त विधितें चूक कीनो पाठ में।
सो होउ पूर्ण समस्त विधिवत् तुम चरण की शरण तैं,
बन्दों तुम्हें कर जोड़ के उद्धार जन्मन मरण तैं।
आह्वाननं स्थापन तथा सन्निधिकरण विधान जी,
पूजन विसर्जन यथा विधि जानों नहीं गुण खान जी।
जो दोष लागो सो नशो सब तुम चरण की शरण तैं,
बन्दों तुम्हें कर जोड़के उद्धार जन्मन मरण तैं।
तुम रहित आवागमन आह्वानन कियो निज भाव में,
विधि यथाक्रम निज शक्ति सम पूजन कियो चित चाव मैं।
सो होउ पूर्ण समस्त विधिवत् तुम चरण की शरण तैं,
बन्दों तुम्हें कर जोड़ के उद्धार जन्मन मरण तैं।

तीन लोक तिहुँ काल में, तुम सा देव न और।
सुख कारण संकट हरण, नमूं युगल कर जोड़॥

शान्ति पाठः—

सब मनुज नाग सुरेन्द्र जाके छत्रत्रय ऊपर धरैं।
कल्याण पंचक मोदमाला पाय भवभ्रम तम हरैं।
दर्शन अनन्त अनन्त ज्ञान अनन्त सुख वीरज भरैं।
जयवंत ते अरिहंत शिवतियकंत मो उर संचरैं ॥१॥
धर ध्यान रूप कमान बान सुतान तुरत जलादिये।
युतमान जन्म जरा मरणमय त्रिपुर फेर नहीं भये।
अविचल शिवालय धाम पायो स्वगुणतें न चलें कदा।
ते सिद्ध प्रभु अविरुद्ध मेरे शुद्ध ज्ञान करो सदा ॥२॥
जे पंच विधि आचार निर्मल पंच-अग्नि सुसाधते।
वर द्वादशाङ्ग समुद्र अवगाहत सकल भ्रम बाधते।
धन सूरि सन्त महन्त विधिगण हरण को अति दक्ष हैं।
ते मोक्ष लक्ष्मी देहु हमको जाहिं नाहिं विपक्ष हैं ॥३॥
जे भीम भव कानन कुअटवी पाप पंचानन जहां।
तीक्षण सकल जन दुःखकारण जासके नखगण महा।
तहँ भ्रमत भूले जीव को शिवमग बतावैं सर्वदा।
तिन उपाध्याय मुनीन्द्र के चरणारविन्द नमूं सदा ॥४॥
बिन-संग उग्र अभंगतपतैं अंग में अति क्षीण हैं।
नहिं हीन ज्ञानानन्द ध्यावत धर्मशुक्ल प्रवीण हैं॥
अति तपो कमला कलित भासुर सिद्ध पद साधन करैं।
ते साधु जयवंत सदा जे जगत के पातक हरैं ॥५॥

शिवपुर अनूपम वास जिस अभिलाष अहमिन्द्रन प्रतैं ।
तिस पंथ भ्रमतमबु विकट दृग छयो मोह-पटलहितैं ॥
वन्दों जिनेन्द्रवचन-अमल-मणि-दीप जो न प्रकाशतो ।
गुरु वैद्य किं मिलतो न दृग खुलतो न शिवपथ भासतो ।६
परिवर्तपंच महांधद्रह में पड़े विलख रहे सदा ।
अनिवार मोह महान रिपु निर्दय न उबरन दे कदा ॥
सो अरि प्रहरि तिम द्रहउवर सुख धरै मोइ धरम है ।
स्वाधीन शास्वत शान्तिरसमय भजो सुकृत परम है ॥७॥
संसार में जिय को सु हित है मोक्ष सो विधिनाश तैं ।
विधि नाश आत्म उजास करि सुप्रकाश प्रकृति उदास तैं ॥
सो कर्म रिपु नाशत सुजिन प्रतिमा चितार विलोकतैं ।
बिन वस्त्र भूषण-शस्त्र वंदूं, तीन लोक कृताकृतैं ॥८॥
इस जगत में नव इष्ट जियके पंच पद वृष भगवती ।
जिनबिम्ब जिनगृह जान आन अनिष्ट कल्पित दुरमती ॥
तिन नवन को आश्रय उदोतक निमित जिनगृह परिमितें ।
सुर-नर-असुर-पति ओघ पूज्य पवित्र वंदूं जग-हितें ॥९॥
ये परम नव मंगल जगोत्तम परमशरण जगत्त्रये ।
ये ही परम हित अहितहर इनतें हि मनवांछित थये ।
ये करहु मंगल वरसुकन्या मातु पितु हित सर्वदा ।
पुर अपरजन तुम हम सबनके नंदवृद्धि रहो सदा ॥१०॥